RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

छायावादी काव्य का समीक्षात्मक मूल्यांकन

डॉ0 कंचनलता सिंह

वरिष्ठ प्रवक्ता(हिन्दी विभाग), स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कालेज, स्नेह नगर, आलगबाग, लखनऊ

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 December 2018

Keywords
प्रगतिवाद बनाम, छायावाद, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, मानवतावादी विचारधारा, व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनावादी।

ABSTRACT

अंग्रेजी में जिसे रोमाटिसिज्म कहते है हिन्दी में उसे छायावाद कहते है। यो तो हिन्दी कविता में छायावाद का युग द्विवेदी युग के बाद आया किन्तु उसका आरम्भ द्विवेदी युग में ही हो गया था। छायावाद ने भाषा और छन्द को नवीनता प्रदान की। छायावाद का सांस्कृतिक और भावानात्मक सम्बन्ध अतीत और अंग्रेजी की रोमांटिक कविता से स्थापित हो गया था। छायावादी युग के प्रतिनिधि कवि हैं – जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला, सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी वर्मा। छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए, एक तो रहस्यवाद के अर्थ में अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम् को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। इसका दूसरा अर्थ काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में होता है, छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है – नारी सौन्दर्य और प्रेम चित्रण तथा प्रकृति सौन्दर्य और प्रेम की व्यंजना।

शोध का उद्देश्यः

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य छायावादी काव्य में व्यक्तिनिष्ठ, मानवीय मूल्य और कल्पनाशीलता के साथ रहस्यवाद का समीक्षात्मक मूल्यांकन करना है।

शोध का महत्वः

इस शोध का महत्व छायावादी काव्य परम्परा के चारों कवियों के रहस्यमयी, प्रेम, माधुर्य और कल्पनाशीलता के विचारों को समझने, जानने और साहित्य जगत में उनके योगदान के विचारों को प्रस्तुत करना है।

शोध प्रविधिः

इस शोध पत्र में मुख्यतः काव्यगत् शैली, प्रेम चित्रण, नारी सौन्दर्य के साथ प्रकृति सौन्दर्य को प्रस्तुत करने के लिये संक्षिप्त, प्रतीकात्मक, विवरणों को रेखांकित करने का अप्रतिम प्रयास किया गया है।

प्रस्तावनाः

हिन्दी छायावादी काव्य नवीन युग की चेतना के अनुरूप आरम्भ से ही अपने प्रगतिशील आयामों का परिचय देता रहा है। छायावाद की प्रगतिशीलता, युग की परिस्थितियों से उद्भूत, हमारी सांस्कृतिक सामाजिक परम्पराओं का सहज विकास है। छायावादी काव्य जीवन की समग्रता का काव्य है। छायावादी काव्य में चित्रित जीवन की सबसे महत्वपूर्ण प्रगतिशील चेतना यही है कि उसमें जीवन के दोनों पक्षों (बाह्य और आंतरिक) पर पूरी तरह ध्यान केन्द्रीत करवायी है। जीवन का मूल्य केवल शारीरिक ही नहीं मानसिक और आत्मिक भी है। जिसकी सुन्दर एवं सशक्त अभिव्यक्ति छायावाद में है।

यदि उसमें कल्पना का आधिक्य है तो सामाजिक जीवन की यथार्थ विषमतओं से विक्षोभ भी अपनी सहज अभिव्यक्ति पा सका है। उसमें जीवन व्यापी सहस्त्रमुखी काव्य भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। छायावाद में वर्गवादी समाधान नहीं है समन्वयवादी जीवन दृष्टि है। सामाजिक मूल्य छायावाद के भीतर ही अंतरहित था पर सांस्कृतिक मूल्य के रूप में अपने नये प्रगतिशील संचरण में उसने उस सामाजिक मूल्य को नवजीवन के भीतर प्रविष्ट कर उसे अंतरिक्षों के सौन्दर्य के स्थान पर धरती की सुन्दरता की वास्तविकता प्रदान की। छायावाद में वास्तविक मानव सौंदर्य मनुष्यत्व के आदर्श को चित्रित किया। न यथार्थ को नग्नता प्रदान की और न आदर्श को असंभव की सीमा में रहने दिया। जनकल्याण और समाज हितैषी तत्व साहित्य में आवश्यक है। प्रगतिवाद में ही ये जनतांत्रिक भावनायें प्रतिबिम्बित नहीं हुई है। छायावाद में बहुत पहले से ही यह काव्य तत्व सफलीभूत हुआ है। जिस प्रगतिशीलता को मार्क्सवादी लेखक विकसित करना चाहते है। वह जीवन मूल्य भले ही छायावादियों में उनके अनुसार स्वीकृत मापदण्ड से भिन्न पड़ता हो किन्तु वह भी हर दृष्टि से राष्ट्रीय और जनवादी साहित्य है। निराला जी ने पंत की तरह वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात नहीं की, किन्तु अपनी सहज सहानुभूति से ऐसे साहित्य रचा जो पंत जी से (और हिन्दी के किसी भी मार्क्सवादी लेखक से) कहीं अधिक सच्चे अर्थ में प्रगतिशील रहा है।

विवेचनाः

श्रेष्ठ साहित्य सदैव कला जीवन के लिए सिद्धान्त स्वीकार करता है। अतः जीवन में परिव्याप्त उत्पीड़न को समूल नष्ट करना साहित्यकार का ध्येय होता है। सामाजिक भावभूमि से अलग रहकर कवि का काव्य केवल कल्पना या बुद्धि विलास रह जाता है। प्रगतिशील साहित्य सदैव अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करता है। इसमें संदेह नहीं की, छायावाद में मानव जीवन के जिस स्वरूप का चित्रण हुआ है। उस सच्चे अर्थों में विकासमान है।

प्रगतिवाद बनाम छायावाद :

RRIJM 2015, All Rights Reserved

"छायावाद ने सामाजिक बन्धनों को तोड़ने पर रूढ़ियों से विद्रोह करने की उद्दात भावना की सृष्टि की। यह छायावाद का प्रगतिशील विद्रोही पक्ष है।" छायावाद में जिन समालोचकों ने केवल मधुमय काव्य की पलायनवादी भूमिका देखी है उन्हें उन रचनाओं पर दृष्टिपात करना होगा। जो समाज की जटिल, ज्वलंत और समस्याओं के आधार पर रचित हैं। कवियों की आत्मनिष्ठ या वैयक्तिक भावधारा छायावाद में द्रष्टव्य नहीं है। उनकी वस्तुनिष्ठ काव्य दृष्टि भी सराहनीय है। दलित, दुर्बल और शोषित व्यक्तियों के क्रंदन को छायावाद में स्पष्ट स्वर मिले हैं। भारतीय ग्राम्य जीवन व लोकजीवन की सुंदर तस्वीरें पंत और निराला ने प्रस्तुत की है। छायावादी कवियों ने यथार्थ को वाणी दी है। निराला ने बहुत पहले से सदियों की जकड़े हृदय कपाट खोल कर रूढ़ियों और विषमताओं से मुक्ति का संदेश देने के लिए जागे। फिर एक बार कहा था प्राचीन जीर्ण–शीर्ण रूढ़ियों को द्रुतझरों जगत के जीर्ण पात्र कहकर पंत ने मानो मटियामेट कर दिया है। नारी की मुक्ति और देवी सहचरी के रूप में इन छायावादी कवियों ने अपने प्रगतिशीलता का पूरा परिचय दिया है। वेदना को विश्व जीवन का मूल तत्व मानकर पलकों में करूणा का जल भरकर महादेवी ने भी मानवीय विवशताओं और अभावों को देखा है। जर्जर जीवन आंसू, कुचले शैशव संसार को देखकर महादेवी स्पष्ट कह उठती है –जागो बेसुध!

सामाजिक जागरण और लोकमंगल की भावना छायावादी काव्य को केवल आत्मनिष्ठ, एकांकी वैयक्तिक धरातल पर नहीं रहने देती। नव समाज की स्थापना मानवता की मुक्ति और जग के आगमन में ज्योर्तिमय जीवन की कामना छायावाद में व्यक्त हुई है।

सच्ची प्रगति जनकल्याण से हटकर नहीं हो सकती। निःसंदेह छायावाद ने यथातथ्य चित्रण द्वारा अपितु उस विशिष्ट मनोभूमि तक पहुँचने का एक स्वस्थ संबल दिया है। छायावाद में यथार्थ के उस पहलू को अपनाया है। जो व्यक्ति के पूर्णत्व को प्रतिपादित कर जन कल्याण की ओर प्रेरित करता है। छायावाद की प्रगतिशीलता का यह एक विशिष्ट आयाम है। छायावाद ने हमारी सांस्कृतिक व दार्शनिक पीठिका पर हमारे स्वस्थ आचारों–विचारों और मानवीय मूल्यों के अनुसार चेतना के अनुरूप जीवन की विविधमुखी प्रगतिशीलता का प्रमाण दिया है।

प्रगतिशील साहित्य में समसामयिकता की चेतना को स्वीकार किया गया है। छायावाद में सामाजिक जीवन की घटनायें एवम् समस्यायें अपना पूरा स्थान पा सकी है। जो समालोचक यह आक्षेप करते हैं कि छायावाद को कोरी भावनावादी, कल्पनावादी, आत्मनिष्ठ या अन्तर्मुखी धारा है उन्हें यदि केवल निराला की रचनायें ध्यान से देखने का अवकाश मिले तो यह भलीभाँति समझा जा सकेगा कि वे एक वस्तुमुखी, तटस्थ, अनाशक्त और निवैयक्तिक कलाकार की साधना में लीन जीवनानुभव की व्यापकता और सामाजिक ससंस्पर्श से परिपूर्ण चेतना सम्पन्न कवि हैं। "छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ न होकर, मूल्यनिष्ठ रहा है। उसमें व्यक्तिमूल्य का प्रतिनिधि रहा है और जैसे–जैसे मूल्य के प्रति दृष्टिकोण का विकास होता रहा है उसका व्यक्ति तत्व भी विकसित होकर युग के सम्मुख एक अधिक व्यापक आदर्शोन्मुख जीवन दृष्टि उपस्थित करने की चेष्टा करता रहा है। छायावादी आदर्श विगत युगों की एक देशीय उद्दात्ता को अतिक्रम पर विश्वमुखी औदात्य से अनुप्राणित रहा है।" छायावाद में केवल शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश, शोषितों के प्रति शाब्दिक सहानुभूति, समानता का शब्द जाल और नारेबाजी तक सीमित प्रगतिशीलता नहीं है। इन कवियों ने प्रगतिशील सौंदर्य को परखकर उसे स्थायित्व प्रदान किया है।

प्रगतिशील रचनाओं का एक तत्व है राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय भावधारा। छायावादी काव्य में किसी की उपेक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वह मानवजीवन की समय भावधारा से अनुप्राणित है। छायावाद की राष्ट्रीय रचनायें अपने उदार सांस्कृतिक उपादानों और सूक्ष्म अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यंजना के कारण ही इतनी व्यापक चेतना का परिचय देती है। संभवतः किसी अन्य युग की राष्ट्रीय रचनायें शायद ही इसकी समानता कर सके।

'भारति जय विजय कर', 'अरूण यह मधुमय देश तुम्हारा', हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का ये उपहार', 'हिमाद्री–तुंग–श्रृंग से' – आदि रचनायें छायावाद की सशक्त भाव सम्पन्न विशिष्ट राष्ट्रीय काव्य धारा प्रस्तुत करती हैं। ओज प्रधान प्राणवंत पौरूष के परिचायक उद्बोधन गीतों से छायावाद बहुत सम्पन्न है। इन राष्ट्रीय रचनाओं में उपदेश, प्रवचन आदि ने होकर अनुभूति का सुन्दर आलोक है। भारतमाता का यथार्थ रूप तो करोड़ों, नग्नतन, क्षुधित, त्रसित, अशिक्षित, निर्धन व कंकालों में ही देखा जा सकता है।

निश्चित ही यह भावधारा पंत की प्रगतिशील चेतना का ज्वलंत उदाहरण है। पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरूद्ध कवि का आक्रोश और बादल की क्रांति प्रगतिशील राष्ट्रीय काव्यधारा की ही परिचायक है। छायावादी काव्य में स्वातन्त्रता भी है और सामाजिक निर्वाह भी। छायावाद की राष्ट्रीयता न धार्मिक है, न जातीय, न साम्प्रदायिक, न दलगत राजनीति का परिणाम और वह न अंधे देशप्रेम का प्रतीक ही है। अतः वह समस्त विश्व को अपने में समेटकर व्यापक स्वरूप का परिचय देती हुई अन्तर्राष्ट्रीय और उदार मानवतावाद में पर्यवसित होती है।

सांस्कृतिक या मानवीय मूल्यों का विघटन एक देश में नहीं है, वह तो पूरे विश्व में है। अतएव छायावादी काव्य में अपनी प्रगतिशील रचनाओं में उदार मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है और जीवन को उसकी समग्रता में देखा है। "तुम हो महान, तुम सदा हो महान, " कहकर कवि ने मानवीय गरिमा की स्थापना की है। सर्वभूत का कल्याण छायावादी काव्य की प्रधान जीवन दृष्टि है।

छायावादी काव्य ने निश्चित ही इस धरातल पर सुन्दर रचनायें प्रस्तुतकर राष्ट्रीय सीमा के जड़त्व का उखाड़ फेंका है और विश्व संस्कृति तथा उदार मानवतावादी भावना का परिचय दिया है। समाज के खोखलेपन को सामने रखा है।

साहित्य का अध्ययन एक प्रकर से मानवसत्ता का अध्ययन है। अतएव जो लोग केवल ऊपरी तौर पर साहित्य का ऐतिहासिक अथवा समाज शास्त्रीय परिवेश की बात करके चुप हो जाते हैं आवश्कयता नहीं की छायावाद में मनोवैज्ञानिक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

और सौंदर्यात्मक विवेचना की पूर्ण एकात्मकता रहे। छायावाद में मनो–वैज्ञानिक एवं सौन्दर्यवादी चेतना स्पृहणीय है। हमें उसके समाज शास्त्री दृष्टिकोण को भी परखना होगा। छायावादी काव्य में यद्यपि स्वयं के मनोभावों का प्रकटीकरण है। फिर भी वह जन विरोधी नहीं है।

छायावाद में मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा है। मानव मुक्ति का आहवान भी उन्होंने बाह्य परिस्थितियों से प्राप्त सत्य को अपने अन्तर्गत में एकाकार कर कलात्मक अभिव्यक्ति दी। वे समग्र मानव कल्याण को लेकर चले है।

बहुधा यह कहा जाता है कि प्रगतिशील काव्य में कवि का दुःख एवं पीड़ाभाव पूर्णतः वैयक्तिक है किन्तु क्या निराला या पंत की रचनायें प्रारम्भ से ही अभावग्रस्त पीड़ित, शोषित, दलित मानवता के प्रति अपार सहानुभूति से सम्बद्ध नहीं है। यहाँ तक भक्ति परक काव्य में नर को नरकवास से मुक्त करने की कामना है और दलित जन पर करूणा करते हुए दीनता पर ईश्वर की दयामयी शक्ति करूणा को उतारने की याचना है। 'कामायनी' का लक्ष्य भी 'विजयनि मानवता हो जाय' ही है। छायावाद के विषय में कतिपय समीक्षकों ने यह आरोप लगाया है कि स्त्रैण्य काव्य है, सजनीवादी काव्य है, इसमें नारी स्वछंद प्रेम का शिकार बन गयी है परंतु छायावाद में केवल रूपगत् सौन्दर्य ही नहीं ह्रदयगत् सौंदर्य अंकित हुआ है। यह ह्रदयागत् सौंदर्य कवि को विराट सौंदर्य से एकाकार करता है। छायावाद में मानवीय अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति है मानव जीवन का उन्नायक या विकासोन्मुख काव्य ही प्रगतिशील होता है। समर्थ और स्वस्थ कवि निराला का सौंदर्य और श्रृंगार चाहे 'जूही की कली' में हो, चाहे 'सरोज स्मृति' पर स्खलन कहीं लेश भाव नहीं है। छायावाद में नारी के प्रति श्रद्धा और मानवता का भाव है। उसकी बोली में त्रिवेणी की लहरों का मान है। छायावाद में प्रणय स्फुर्तिदायक है। उसका अंत व्यापक रूप में समाजवाद में होता है तभी तो कवि प्रसाद 'आंसू' में शीतल कल्याणी ज्वाला के द्वारा लोक मंगल की भावना से अनुप्राणित है।

छायावादी काव्य की प्रगतिशील रचनाओं में भी दरिद्र नारायण की सेवा का ईश्वर की सेवाभाव, ईश्वर की सेवा के तुल्य ही निरूपित हुआ है। धर्म के स्थान पर धार्मिक रूढ़ियों का खण्डन और धर्म की ओट में पनपने वाले विकृत अमानवीय कृत्यों पर तीखा प्रहार छायावाद में किया गया है। निराला की 'दान' कविता का संकेत पर्याप्त होगा। दिनकर, बच्चन, अंचल, सुमन आदि के काव्य में ईश्वर और धर्म के प्रति क्षोभ भावना बड़ी गहराई से क्षोभ पा सकी है। छायावादोत्तर काव्य की भावना विशेषतः उनके प्रगतिशील चिंतन का द्योतक है। मंदिरों में सिर मारने के स्थान पर मानव प्रेम कहीं अधिक और अनिवार्य है। मानव कल्याण ही कवियों का लक्ष्य है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य में मानवतावादी विचारधारा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, पीड़ित वर्ग के प्रति संवेदनशील होने के कारण छायावादी कवियों में जनकल्याण के प्रति स्वाभाविक रूचि है। छायावाद के समर्थ स्तम्भ श्री जयशंकर प्रसाद, पं0 सुमित्रानंदन पंत, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महीयशी महादेवी वर्मा की मानवतावादी विचारधारा का विकास समाज के अमानवीय तत्वों के विरोध में हुआ। कवियों ने रेखांकित किया है कि मानव ही मानव का भक्षक बना हुआ है। मानव की बुद्धि भौतिक मद से भ्रान्त हो गयी है। युग शोषक शोषित में विभक्त होकर विभिन्न जाति–पांति, वर्ग, श्रेणी में सत्–सत् खण्डित हो गया है। जीवन रस और एकता खो गयी है। जहाँ द्विवेदी युगीन काव्य विषयनिष्ठ (वस्तुपरक) वर्णन प्रधान और स्थूल है, वहीं छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पना प्रधान है। द्विवेदीयुगीन कविता में सृष्टि की व्यापकता और अनेकरूपता को समेटा गया है किन्तु छायावादी कविता में मनोजगत की वाणी को प्रकट करने का प्रयत्न है। मनोजगत के सूक्ष्म तत्व को साकार करने के लिए छायावादी कवियों ने उर्वरा कल्पना शक्ति का उपयोग किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक कवि – सुमित्रानंदन पंत–1957
2. आधुनिक कवि – सुमित्रानंदन पंत–1998 संस्करण
3. निराला, अनामिका भारती – सूर्यकांत त्रिपाठी – 1963
4. निराला, अणिमा – सूर्यकान्त त्रिपाठी – 1971
5. निराला, कुकुरमुत्ता – सूर्यकान्त त्रिपाठी–1969
6. निराला, गीतिका – सूर्यकान्त त्रिपाठी–2005
7. कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन – डॉ0 द्वारिका प्रसाद
8. काव्य में पादप : पुण्य – प्रो0 श्री चंद्र जैन
9. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
10. आंसू – जयशंकर प्रसाद
11. दीपशिखा – महादेवी वर्मा
12. यामा – महादेवी वर्मा
13. हिन्दी साहित्य कोश – भाग–1, धीरेन्द्र वर्मा
14. हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास – डॉ0 मोहन अवस्थी
15. उत्तर छायावाद – परिवेश और प्रवृत्तियाँ
16. स्वच्छंदतावाद तथा छायावाद
17. कोमलकांत पदावली

RRIJM 2015, All Rights Reserved